1. INDIAN CIVILIZATION AND CULTURE

Mohandas Karamchand Gandhi

Paragraph-1

I believe that the civilization India has evolved is not to be beaten in the world. Nothing can equal the seeds sown by our ancestors. Rome went, Greece shared the same fate the might of the Pharaohs was broken. Japan has become westernized of China nothing can be said but India is still, somehow or other, sound at the foundation. The people of Europe learn their lessons from the writings of the men of Greece or Rome, which exist no longer in their former glory. In trying to learn from them, the Europeans imagine that they will avoid the mistakes of Greece and Rome. Such is their pitiable condition. मैं मानता हूँ कि भारत में विकसित सभ्यता को दुनिया में चुनौती नहीं दिया जा सकता. हमारे पूर्वजों द्वारा बोये गए बीज के बराबर कुछ भी नहीं हो सकता है. रोम दुनिया से मिट गया, ग्रीस का वही हाल हुआ; फिरौन के बल टूट गए; जापान पश्चिमी देशों जैसा बन गया; चीन का कुछ भी नहीं कहा जा सकता, लेकिन भारत अभी भी, किसी न किसी तरह अपनी नींव पर जमा हुआ है। यूरोप के लोग ग्रीस या रोम के लेखन से सबक सीखा. जो अब अपने पूर्व महिमा में मौजूद नहीं हैं, उनसे सीखने की कोशिश में, यूरोपीय मान बैठे कि वे ग्रीस और रोम की गलतियों से बच जाएंगे. ऐसा उनकी दयनीय स्थिति है।

Paragraph-2

In the midst of all this India remains immovable and that is her glory. It is a charge against India that her people are so uncivilized, ignorant and stolid, that it is not possible to induce them to adopt any changes. It is a charge really against our merit. What we have tested and found true on the anvil of experience we dare not change. Many thrust their advice upon India, and she remains steady. This is her beauty: it is the sheet anchor of our hope. इन सब के बीच भारत अचल रहा और यही उसकी महिमा है, यह भारत के खिलाफ आरोप है कि उसके लोग इतने अशिक्षित, अज्ञानी और बेवकूफ हैं, कि उन्हें किसी भी परिवर्तन को अपनाने के लिए प्रेरित करना संभव नहीं है. वास्तव में ये हमारे योग्यता के खिलाफ आरोप है जिसे हमने अपने अनुभव की निहाई पर परखा और सही पाया. हमे बदलने

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

Please Subscribe us on Youtube, Facebook & Telegram

की साहस न करे कईओं ने भारत पर अपनी सलाह थोपी पर हम स्थिर रहें। यही हमारी सुंदरता है. यही हमारे उम्मीद की मुख्य आधार है

Paragraph-3

Civilization is that mode of conduct which points out to man the path of duty. Performance of duty and observance of morality are convertible terms. To observe morality is to attain mastery over our mind and our passions. So doing, we know ourselves. The Gujarati equivalent for civilization means "good conduct". सभ्यता वह आचरण है जो इंसान को कर्तव्य का पथ बताती है। कर्तव्यों का प्रदर्शन और नैतिकता का पालन परिवर्तनीय नियम हैं. नैतिकता का पालन करना हमारे मन और हमारे जुनून पर स्वामित्व प्राप्त करना है। ऐसा करने से, हम खुद को जानते हैं गुजराती में सभ्ता का सामनार्थ अर्थ है "अच्छे आचरण"

Paragraph-4

If this definition be correct, then India, as so many writers have shown, has nothing to learn from anybody else, and this is as it should be. यदि यह परिभाषा सही है, तो भारत, जैसा की इतने सारे लेखकों से पता चलता है, किसी और से सीखने की आवश्यकता नहीं और ये वैसा ही है जैसा होना चाहिए

Paragraph-5

We notice that the mind is a restless bird the more it gets the more it wants, and still remains unsatisfied, The more we indulge our passions the more unbridled they become. Our ancestors, therefore, set a limit to our indulgences. - They saw that happiness was largely a mental condition. हम देखते हैं कि मन एक बेचैन पक्षी है; जितना अधिक मिलता है उतना अधिक चाहता है, और तब भी असंतुष्ट रहता है। जितना अधिक हम अपनी भावनाओं में लिप्त होंगे उतना ही ये बेलगाम होगा इसलिए हमारे पूर्वजों ने हमारे भोग-विलास की एक सीमा निर्धारित की है। उन्होंने देखा कि खुशी काफी हद तक एक मानसिक स्थिति है।

Paragraph-6

A man is not necessarily happy because he is rich, or unhappy because he is poor. The rich are often seen to be unhappy, the poor to be happy. Millions will always remain poor. Observing all this, our ancestors dissuaded us from luxuries and pleasures, We have managed with the same kind of plough as existed thousands of years ago. We have retained the same kind of cottages that

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

we had in former times and our indigenous education remains the same as before. We have had no system of life-corroding competition. Each followed his own occupation or trade and charged a regulation wage. It was not that we did not know how to invent machinery, but our forefathers knew that, if we set our hearts after such things, we would become slaves and lose our moral fibre. They, therefore, after due deliberation decided that we should only do what we could with our hands and feet. They saw that our real happiness and health consisted in a proper use of our hands and feet. ये जरूरी नहीं कि एक आदमी खुश है क्यों की वो आमिर है या दुखी है क्यों की वो गरीब है, कई बार देखा गया है की अमीर दुखी होता है और गरीब सुखी। लाखों हमेशा गरीब रहेंगे, यह सब देखकर, हमारे पूर्वजों ने हमें विलासिता और आनंद से रोका। हजारों साल से हम उसी तरह की हल के साथ काम कर चुके हैं जो सालो पुराण है। हम उसी तरह की कुटिया (झोपड़ी) में बरकरार है जो हमारे पास पुराने जमाने से थी। और हमारी स्वदेशी शिक्षा पहले की तरह ही है. हमारे पास जीवन-भ्रष्ट प्रतियोगिता की कोई प्रणाली नहीं है. सब अपने-अपने व्यवसाय-व्यापार में लगे हैं और एक निर्धारित मजदूरी लेते हैं, ऐसा नहीं था कि हमें मशीनरी का आविष्कार करने का तरीका पता नहीं था, बल्कि हमारे पूर्वजों को पता था कि अगर हम ऐसी चीजों में अपना दिल लगाते हैं, तो हम उस चीजों के दास बन जाएंगे और अपना चरित्र खो देंगे, वे इसलिए, विचार- विमर्श के बाद यह निर्णय लिया कि हमें केवल वही करना चाहिए जो अपने हाथों और पैरों के बल पे कर सके, उन्होंने देखा कि हमारी वास्तविक खुशी और स्वास्थ्य हमारे हाथों और पैरों के उचित उपयोग में है।

Paragraph-7

They further reasoned that large cities were a snare and a useless encumbrance and that people would not be happy in them, that there would be gangs of thieves and robbers, prostitution and vice flourishing in them and that poor men would be robbed by rich men. They were, therefore, satisfied with small villages. उन्होंने आगे ये तर्क दिया की बड़े शहर प्रलोभन का एक जाल है तथा बेकार की एक बोझ है और जिस में लोग खुश नहीं रह पाएंगे, कि चोरों और लुटेरों का गिरोह होगा, वेश्यावृत्ति और बुराइयां इन में फले-फूलेगी और गरीब लोगों को अमीर द्वारा लुटा जाएगा। इसलिए वे छोटे से गांवों मे संतुष्ट थे।

Paragraph-8

They saw that kings and their swords were inferior to the sword of ethics, and they, therefore, held the sovereigns of the earth to be inferior to the Rishis and the Fakirs. A nation with a constitution like this is fitter to teach others than to

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

learn from others. This nation had courts, lawyers and doctors, but they were all within bounds. Everybody knew that these professions were not particularly superior moreover, these vakils and vaids did not rob people they were considered people's dependants, not their masters. Justice was tolerably fair. The ordinary rule was to avoid courts. There were no touts to lure people into them. This evil, too, was noticeable only in and around capitals. The common people lived independently and followed their agricultural occupation. They enjoyed true Home Rule. उन्होंने देखा कि राजाओं और उनकी तलवार नैतिकता की तलवार के आगे बेकार है, और इसलिए, उन्होंने धरती के राजाओं को ऋषियों और फाकिरों से नीच समझा। एक ऐसी राष्ट्रीय संविधान जो दूसरों से सीखने के बजाय सिखाने में सक्षम हो, इस देश में अदालत, वकील और डॉक्टर थे, लेकिन वे सभी सीमा के भीतर थे। हर कोई जानता था कि ये व्यवसाय विशेष रूप से श्रेष्ठ नहीं थे; इसके अलावा,ये वकील और डॉक्टरों लोगों को लुटते नहीं थे वे लोगों पे आश्रितों समझे जाते थे, न कि उनके स्वामी न्यायसंगत निष्पक्ष था। साधारण नियम अदालतों से बचने के लिए था। इसमें लोगों को लुभाने के लिए कोई व्यवस्था न थी यह बुराई भी, सिर्फ राजधानियों और उसके आस-पास देखी जा सकती थी। आम लोग स्वतंत्र रूप से रहते और अपना कृषि व्यवसाय किया करते, वो घर की जिदगी का सच्चा आनंद लिया करते थे

Paragraph-9

The Indian civilization, as described by me, has been so described by its votaries. In no part of the world, and under no civilization, have all men attained perfection. The tendency of the Indian civilization is to elevate the moral being that of the Western civilization is to propagate immorality. The latter is godless, the former is based on a belief in God. So understanding and so believing, it behooves every lover of India to cling to the old Indian civilization even as a child clings to the mother s breast. भारतीय सभ्यता, जैसा कि मेरे द्वारा वर्णित है, इसके तरफ़दार (शुभचितक) द्वारा भी इसी तरह वर्णित किया गया है। दुनिया के किसी भी हिस्से में, और कोई भी सभ्यता में, वहाँ के सभी लोग सिद्धि को प्राप्त नहीं कर पाते हैं भारतीय सभ्यता की प्रवृत्ति नैतिक स्तर को बढ़ाना है जब की पश्चिमी सभ्यता का अनैतिकता का प्रचार-प्रसार करना है, बाद वाला ईश्वरहीन है, पूर्व वाला ईश्वर मे विश्वास रखने वाला है, बहुत ही समझने लायक और बहुत ही विश्वास करने योग्य' यह भारत से प्यार करने वालो का कर्तव्य (जिम्मेदारी) है की भारत की पुरानी सभ्यता से ऐसे चिपक जाए जैसे बच्चा अपनी माँ के छाती से

Paragraph-10

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

I am no hater of the West. l am thankful to the West for many a thing l have learnt from Western Literature. But I am thankful to modern civilization for teaching me that if I want India to rise to its fullest height, I must tell my countrymen frankly that, after years and years of experience of modern civilization, I have learnt one lesson from it and that is that we must shun it all cost. मैं पश्चीमियों का निदक नहीं हूँ। मैं पश्चीमियों का आभारी हूँ की उनकी साहित्य से बहुत कुछ सीखा , लेकिन मैं आधुनिक सभ्यता का आभारी हूं ये सिखाने के लिए कि अगर मैं भारत को शिखर तक पहुँचाना चाहता हूँ तो, मुझे अवश्य अपने देशवाशियों से साफ तौर पर कह देना चाहिए कि,. आधुनिक सभ्यता के वर्षों के अनुभव के बाद, मैंने इससे एक सबक सीखा और वो ये है कि हमें इसे किसी भी कीमतों पर दूर रखना चाहिए

Paragraph-11

What is modern civilization? It is worship of the material, it is the worship of the brute in us, it is unadulterated complete materialism, and modern civilization is nothing if it does not think at every step of the triumph of material civilization. आधुनिक सभ्यता क्या है? यह संसाधन की पूजा है, यह हमारे अंदर के भावशून्यता की पूजा है, यह पूर्णतः भौतिकवाद है. और आधुनिक सभ्यता कुछ भी नहीं है अगर वह भौतिक सभ्यता की जीत के हर चरण के बारे में नहीं सोचती है।

Paragraph-12

It is perhaps unnecessary, if not useless to weigh compare the merits of the two civilizations. It is likely that the west has evolved a civilization suited to its climate and surroundings and similarly, we have a civilization suited to our conditions, and both are good in their own respective spheres. यह शायद अनावश्यक है, अगर नहीं तो बेकार है, दोनों सभ्यताओं के गुणों की तुलना करना। यह प्रतीत होता है कि पश्चिम ने एक ऐसी सभ्यता विकसित की है जो उसके जलवायु और परिवेश के अनुकूल है, और ठीक उसी तरह, हमारी सभ्यता है जो हमारी परिस्थितियों के अनुकूल है. और दोनों ही अपने अपने क्षेत्रों में अच्छे हैं

Paragraph-13

The distinguishing characteristic of modern civilization is an indefinite multiplicity of human wants. The characteristic of ancient civilization is an imperative restriction upon and a strict regulating of these wants. The modern or Western insatiableness arises really from want of a living faith in a future

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

state and therefore also in Divinity. The restraint of ancient or Eastern civilization arises from a belief, often in spite of ourselves in future state and the existence of a Divine Power. आधुनिक सभ्यता में विशेष अंतर मानवीय इच्छाओं की एक अनिश्चित बहुगुणता है। प्राचीन सभ्यता की विशेषता इन प्रतिबंधों पर एक अनिवार्य प्रतिबंध है और सख्त विनियमन है. आधुनिक या पश्चिमी अस्थिरतापन की उत्पत्ति वास्तव में उस समय उत्पन्न होती है जब भविष्य में भी रहने की चाहत हो तथा देव लोक की भी चाहत हो (लोक और परलोक दोनों की लालसा हो/ दिन भी चाहता हो और दुनिया भी), प्राचीन या पूर्वी सभ्यता का संयम एक विश्वास से उत्पन्न होता है, भविष्य की चिंता छोड़ कर खुद को परलोक की चिंता में लीन कर लेता है

Paragraph-14

Some of the immediate and brilliant results of modern inventions are too maddening to resist. But I have no manner of doubt that the victory of man lies in that resistance. We are in danger of bartering away the permanent good for a momentary pleasure. आधुनिक आविष्कारों के कुछ तत्काल और शानदार परिणाम लाजवाब कर देने वाला होता है. लेकिन मुझे कोई संदेह नहीं है कि आदमी की जीत संघर्ष में है। हम स्थाई हीत का सौदा छन भर के आनंद के साथ करने का जोखिम उठा रहे हैं

Paragraph-15

Just as in the West they have made wonderful discoveries in things material, similarly Hinduism has made still more marvelous discoveries in things of religion, of the spirit, of the soul. जिस तरह पश्चिमियों ने अदभूत वस्तुओं की खोज की है ठीक इसी प्रकार हिन्दू धर्म ने धर्म, आधयात्मिक तथा अंतरात्मा के क्षेत्र में बहुत से अद्भुत सिद्धि प्राप्त की है।

Paragraph-16

But we have no eye for these great and fine discoveries. We are dazzled by the material progress that Western science has made. I am not enamoured. of that progress. In fact, it almost seems as though God in His wisdom had prevented India from progressing along those lines, so that it might fulfill its special mission of resisting the onrush of materialism. पर हमारा ध्यान इतने उत्तम खोजों पे नहीं है. पश्चिमी विज्ञान ने जो सांसारिक वस्तु में प्रगति की है, उसने हमें चकाचौंध कर दिया है। मैं उस प्रगति से मोहित नहीं हूँ, वास्तव में, ऐसा लगता है जैसे कि भगवान ने अपने ज्ञान से भारत को प्रगति की उन पंक्तियों के साथ

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

खड़ा होने से रोक दिया. ताकि वह भौतिकवाद के बढ़ते कदम का विरोध करने के अपने विशेष मिशन को पूरा कर सके।

Paragraph-17

After all, there is something in Hinduism that has kept it alive up till now. It has witnessed the fall of Babylonian, Syrian, Persian and Egyptian civilizations. Cast a look round you. Where are Rome and Greece? Can you find today anywhere the Italy of Gibbon, or rather the ancient Rome, for Rome was Italy? आखिरकार, हिदुत्व में कुछ ऐसा है जो अभी तक उसे जीवित रखें हुआ है। यह बेबीलोनियन, सीरियन, फारसी और मिस्र की सभ्यताओं के पतन का साक्षी बना। अपने चारों ओर एक नज़र डालो (दौराओ)। रोम और ग्रीस कहां हैं ? क्या आप आज गिब्बोन के इटली या प्राचीन रोम जो इटली में हुआ करता था कहीं पे भी ढूंढ सकते हैं?

Paragraph-18

Go to Greece. Where is the world-famous Attic civilization? Then come to India, go through the most ancient records and then look round you and you would be constrained to say, 'Yes, I see here ancient India still living. ग्रीस जाएं विश्व प्रसिद्ध एटिक सभ्यता कहां है? फिर भारत में आ के देखो, प्राचीन अभिलेख उठा के देखो, फिर अपने आस-पास देखो, आप विवश हो जाएंगे कहने को की "हाँ" हम यहां प्राचीन भारत को अभी तक जिन्दा देख रहे हैं

Paragraph-19

True, there are dung-heaps, too, here and there, but there are rich treasures buried under them. And the reason why it has survived is that the end which Hinduism set before it was not development along material but spiritual lines. ये सच है, गोबर का ढेर भी यहां वहा परा मिलेगा. लेकिन उनके अंदर दफन धनी खजाने हैं। और येह अंत तक बच इसलिए गया की हिदुत्व ने तरक्की का सिद्धांत भौतिकवाद नहीं बल्कि आध्यात्मिक चुना था

Paragraph-20

Our civilization, our culture, our Swaraj depend not on multiplying our wants-self-indulgence, but on restricting our wants-self-denial. हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति, हमारा स्वराज हमारी इच्छा-भोग वृद्धि पे नहीं बल्कि इच्छा-भोग को सिमित करने पर टीकी हुई है

Paragraph-21

European civilization is no doubt suited for the Europeans but it will mean ruin for India, if we endeavor to copy it. This is not to say that we may not adopt and

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

assimilate whatever may be good and capable of assimilation by us as it does not also mean that even the Europeans will not have to part with whatever evil might have crept into it. यूरोपीय सभ्यता कोई संदेह नहीं है कि यूरोपियों के लिए अनुकूल है लेकिन भारत के लिए विनाशकारी होगा, अगर हम इसे नक़ल करने का प्रयास करते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हम ने नहीं अपनाया और पचाया जितना कुछ हमलोगो के लिए अच्छा था और पचाने लायक था. और इसका मतलब ये भी नहीं के जो कुछ बुराई यूरोपियों में पनपनाई ही है उसका जिम्मेदार वो नहीं होगा

Paragraph-22

The incessant search for material comforts and their multiplication is such an evil, and I make bold to say that the Europeans themselves will have to remodel their outlook, if they are not to perish under the weight of the comforts to which they are becoming slaves, It may be that my reading is wrong, but I know that for India to run after the Golden Fleece is to court certain death. Let us engrave on our hearts the motto of a Western Philosopher, 'plain living and high thinking'. Today it is certain that the millions cannot have high living and we the few who profess to do the thinking for the masses run the risk, in a vain search after high living, of missing high thinking. भोग विलास की वस्तु की निरंतर खोज और इसमें लगातार वृद्धि एक ऐसी बुराई है और मुझे बोलने पर विवास कर देती है की, यूरोपियों को अपने दृष्टिकोण को फिर से तैयार करना होगा, यदि वे आराम के भार के नीचे नाश नहीं होना चाहते है जिसके वे गुलाम बन रहे हैं। हो सकता है मेरी अध्ययन गलत हो, पर मुझे मालुम है भारत के लिए गोल्डन फ्लीस के पीछे भागना घातक साबित हो सकता है, आइए हम अपने दिलों पर एक पश्चिमी दार्शनिक के सिद्धांत के आदर्श वाक्य, 'सादा जीवन और उच्च सोच' अंकित कर ले आज यह निश्चित है कि लाखों लोगों को उच्च जीवन नहीं मिल सकता है, और हम से जो कोई जनता के लिए सोचने का जोखिम उठाते हैं, उच्च रहन सहन में रहने के बाद उच्च विचार को खो देते हैं।

Paragraph-23

Civilization, in the real sense of the term, consists not in the multiplication but in the deliberate and voluntary restriction of wants, This alone increases and promotes contentment, real happiness and capacity for service. सभ्यता, असल में बहुलीकरण में नहीं बल्कि स्वैच्छिता से जरूरतों पे लगाम लगाने का नाम है. यह अकेले संतोष, वास्तविक सुख और सेवा की क्षमता को बढ़ावा देता है।

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

Paragraph-24

A certain degree of physical harmony and comfort is necessary, but above a certain level it becomes a hindrance instead of a help. Therefore the ideal of creating an unlimited number of wants and satisfying them seems to be a delusion and a snare. The satisfaction of one's physical needs even the intellectual need of one's narrow self, must meet at a certain point a dead stop, before it degenerates into physical and intellectual voluptuousness. A man must arrange his physical and cultural circumstances so that do not hinder him in his service of humanity on which all his energies should be concentrated. कुछ हद तक शारीरिक सद्भाव और आराम आवश्यक है, पर उसके बाद यह मदद के बजाय एक बाधा बन जाती है। इसलिए अनंत इच्छा को पालना और उसकी पूर्ति करना एक भ्रम और जाल जैसा लगता है व्यक्ति के स्वयं की संकुचित शारीरिक तथा मानसिक जरूरतों की पूर्ति एक निश्चित बिदु पे जा मिलती है वो है मृत्यु। इससे पहले कि यह (जीवन) भौतिक और बौद्धिक विलासिता में गल जाए एक आदमी को अपने शारीरिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की व्यवस्था कर लेनी चाहिए. ताकि मानवता की सेवा में बाधा न दें जिस पर उसकी सारी ऊर्जा केंद्रित होनी चाहिए।

❁ ❁ ❁

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA